॥अथ सर्व सार संग्रह लिख्यते॥

इसमे श्रीमद्भागवत के
श्लोकों का संग्रह है
और महाभारत के श्लो
क बी है और गर्ग संहि
ता के श्लोकों का बी संग्र
है इस मे कापी मे
और दृष्टान्त बहुत से है और
र राजनीति के श्लोक बी है

और बालरां प्रशंसा बी है॥ ब्राह्मण
किसको कहते है क्षत्रिय किसको कहते
है वैश्य किसको कहते है शूद्र किसको
कहते है॥ प्रश्न [illegible] वानप्रस्थ [illegible]
[illegible] किसको कहते है॥ उत्तर॥ प्रश्न [illegible]
[illegible] ब्राह्मणः॥ [illegible]
[illegible] विप्र [illegible] भोजन [illegible]

विशन्ति प्रविशन्ति ज्ञानी नरा द्वी इति विशः विश धातोः क्वि
प्रत्यय करने से विश, फेर स्वार्थ मे ष्यञ् करने से
वैश्य शब्द सिद्ध होता है ॥ यह वैश्य का अर्थ है ॥

भा० स्कं० ७ अ० ११ श्लो० १६ में क्षत्रिय वैश्य शूद्रों के धर्म और ल
क्षण वर्णित है ॥

गर्गसंहिता खण्ड गोलोक अ० ४ श्लो० २० भगवान् ब्रह्मक
मलाणं प्राति ॥ वृषभस्य लक्षणम् ॥ अब्दं दश
दिनां भानुभिः कल्पितं विधौ ॥ दशावे दंप
भवेत्सोपि वृषः भकाध्यते ॥ १ ॥

ब्राह्मण के नव गुणों कर कडक हो सो ब्राह्मण के
है ॥ नव गुण यह है ॥ ऋजुः तपस्वी विद्वांस
समाधानः ॥ जितेन्द्रियः दाता च दान्त दयालु
श्च ब्राह्मणो नवभिर्गुणैः ॥ यह नव
गुण है ॥ नगधुरे के है सो है देवपाखे
गदा वनति ॥ देव पूज्याः ब्राह्मणाः ॥
ब्राह्मणो वेद रक्षकः ॥ क्षत्रियो दुःख
संत्राता ॥ भोजनादपि धेनुं च स्वकान्
भवे भोज्यते ॥ वैश्य वर्णो समाख्यातः तत्र द्रव्य
संपदा धनवान् ॥ प्रतिग्रहस्तु विप्राणां राज्ञां प्रजापा
लनं तथा कुसीदं चैव वाणिज्यं विशामेव प्रकीर्ति
तं सेवा वृत्तिस्तु शूद्राणां कृषि वा संप्रकीर्ति
ता ॥ ११ ॥ हारित स्मृतौ ॥ प्रतिग्रहं चैव स्वर्थं
लक्षणस्तु समाचरेत् ॥ आपद्यपि न कुर्वीत से
वां वाणिज्य मेव च ॥ प्रसन्न प्रतिग्रहं सोपत
पार्थस्य विक्रयं अन्यायोपार्जितं द्रव्यं आपद्य
पि वैश्य [illegible] है ॥

जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्कारैर्द्विज उच्यते विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभिः श्रोत्रिय लक्षणम् २ जातिनिर्णीय ग्रंथेऽस्ति· अलवेदं जानाती ति ब्राह्मणः॥ यह श्लो· को अर्थ है॥

अथ ब्राह्मण प्रशंसा॥ ब्राह्मणों की स्तुति॥ ब्राह्मण जो महान है बडे है॥ भा० मे वी दशम स्कंध मे श्री अ० ६४ मे श्लोक ४२ मे भगवान का वाक्य है॥ अथ्याहं प्रणमे विप्राननन्तकालं समाहितः तथा नमत यूयं च योऽन्यथा मे स दण्डभाक्॥ टीका॥ वीरराघवी॥ यथाऽहं विप्राननु अनन्तकालं त्रिसन्ध्यं प्रणमे नमस्करोमि तथा यूयं नमत यो न नमेत स मत्तो दण्डभाक् स्यात्॥ यह भगवान का वाक्य है अपने दासों के प्रति॥ ४२॥ ब्राह्मण जाति मात्र से भी बडा है और कर्म से भी बडा है॥ इस मे प्रमाण मनुस्मृति को और महाभारत को देते है॥ मनु० अ० ७ श्लोक ८४॥ न स्कंदते न व्यथते न विनश्यति कर्हिचित् वरिष्ठमग्निहोत्रेभ्यो ब्राह्मणस्य मुखे हुतम्॥१॥ अर्थ० अग्नौ यज्ञ विधि पतेन कदाचित् स्कंदते स्रवति अधः पतति॥ कदाचिन्न व्यथते शुष्यति॥ कदाचित् तत् दुर्दिना न श्यति॥ ब्राह्मणस्य मुखे यजुतं तत् कदाचिदपि न स्कंदते न अधः पतति॥ न व्यथते शुष्यति॥ न कदाचित् दुर्दिनान्नश्यति॥ अतः ब्राह्मणस्य मुखे यजुतं तत् श्रेष्ठम्॥ वरं भवति॥ मनु० अ० ९ श्लो० ३१७॥ अविद्वांश्चैव विद्वांश्च ब्राह्मणो दैवतं महत् प्रणीतश्चाप्रणीतश्च यथाग्निर्दैवतं महत्॥ एवं यद्यप्यनिष्टेषु वर्तते

चाद्यतिरक्षति जनानुदैन्यः दीनएव दानिपः अथवा द
[illegible] तत्र पतति द्विजत्वेन [illegible] अर्थ है॥

ते सर्वे कर्मिणः सर्वेषां ब्राह्मणाः ज्यायः परमं दैव
तं हितं ॥१॥ मनु॰ अ॰ १०॰ श्लो॰ ७४ ब्राह्मणा
ब्रह्मयोनिस्था ये स्वकर्मण्यवस्थिताः ते सम्यगु
पजीवेयुः षट्कर्माणि यथाक्रमम् ॥२॥ अ
ध्यापनम् १ अध्ययनम् २ यजनम् ३ याजनं
तथा ४ दानम् ५ प्रतिग्रहश्चैव ६ षट् कर्माण्य
ग्रजन्मनः ॥ षण्णां तु कर्मणामस्य त्रीणि क
र्माणि जीविका ॥ याजनाध्यापने चैव विशुद्धा
च्च प्रतिग्रहः ॥३॥ त्रयो धर्मा निवर्तन्ते ब्राह्म
णात् क्षत्रियं प्रति ॥ अध्यापनं याजनं
च तृतीयश्च प्रतिग्रहः ॥३॥ वैश्यं प्रति
तथैवैते निवर्तेरन्निति स्थितिः ॥ न तौ प्रति
हि तान्धर्मान् वृष्णिकपच कृ पि॰ वि॰ ष ॥ आ
जीवनार्थं धर्मस्तु दानमध्ययनं यजिः ॥१॥
म॰ अ॰ १०॰ अष्टमे वर्षे ब्राह्मणमुपनयेत् गर्भाष्ट
मे वा ॥ एकादशे क्षत्रियम् ॥ द्वादशे वैश्यम् ॥ श्रु
तिरप्याह ॥ अष्टवर्षं ब्राह्मणमुपनयीत ॥
याज्ञवल्क्ये पि॰ अ॰ १ मे ॥ तपस्तप्त्वासृजद्ब्रह्मा
ब्राह्मणान् वेदगुप्तये तृप्त्यर्थं पितृदेवानां ध
र्मसंरक्षणाय च ॥१॥ अपरटीका ॥ ब्रह्मा हिर
ण्यगर्भः कल्पादौ तपस्तप्त्वा ध्यानेन कृत्वा कान्
अख्यान् सृजामि एवं विचार्य प्रथमं ब्राह्म
णान् ससर्ज सृष्टवान् ॥ किमर्थं वेदगुप्तये ॥
वेदसंरक्षणार्थम् ॥ पितृणां देवानां च तृप्त
र्थम् ॥ अपरञ्च [illegible] धर्मसंरक्षणाय च ॥

अतजन्मोदत्तं अक्षय फलं भवति ॥ सर्व स्व
क्षत्रियादेविप्राः प्रभवः अग्रजाः जो ऐसा कर्म अभ्
यु और देखो जाति से ब्राह्मण सिद्ध है ॥ जो पढने से कर्म
से ही ब्राह्मण होता तो विश्वामित्र तप क्यूं करते और
मूर्ख ब्राह्मणः ऐसा प्रयोग मानव धर्मशास्त्र मे न
हीं होता और व्याकरण मे न ब्राह्मणः अब्राह्मणः ऐ
सा प्रयोग क्यूं होता और कर्म करणे से जाति बी नहीं
बदली जाती है ॥ परशुराम जी को २१ वार क्षत्र
यूं को क्षत्रियमार कोई बी उन को क्षत्रिय न हीक
ह्या ब्राह्मण ही कहलाये क्षत्रिय कर्म युद्ध आदि क
रते रहे फेर बी ब्राह्मण ही कहलाये ॥ द्रोणाचा
र्य अस्त्र शस्त्र विद्या मे बडे निपुण थे अर्जुन दु
र्योधन वगैरा जिन के शिष्य थे अस्त्र शस्त्र विद्या
सिखावते थे पढावते थे ॥ उन को कोई बी क्षत्रिय न
हीं कहता था ब्राह्मण द्रोणाचार्य कहते थे युद्ध बी
करते थे फेर बी ब्राह्मण कहलाये ॥ फेर जब कर्ण
परशुराम जी के पास विद्या पढने को गये तब झू
ठ असत्य बोले के मै ब्राह्मण हूं पीछे ते परशुरा
म जी को क्षत्रिय जान कर शाप दिया यदि जो पढ
ने करणे से ही ब्राह्मण होता तो उसे क्यूं शाप पाव
ना पडता अपनी जाति और जो गुण कर्म से ही
उच्च वर्ण होता तो कर्ण मे कौन से गुण क्षत्रिय
के न हीं थे गुण तो सब ही थे और असल मे था बी
क्षत्रिय परन्तु अपनी जाति की खबर न ही
होणे से सूतपुत्र नाम से विख्यात थे कुमारी

कुंती के सूर्य भगवान की दृष्टि से गर्भ हो गया था उस
गर्भ को लज्जित होकर के कुंती राधा कुंड था उस
कुंड में गर्भ को त्याग कर के अपने स्थान पर चै
ली आवती भई वहां सूदर जाता था उस कुंड में
उन्हों ने कर्ण की रक्षा कर ली है यही इस कारण
से सूतपुत्र दासीपुत्र के है जो था सूत पुत्र
नाम से विख्यात थे समय द्रोपदी के स्वयंवर
में धनुष कर्ण को उन पाण्डवों समय द्रोपदी
को कहा के हम सूतपुत्र को दासी पुत्र को न ही
वरें जे क्युं के यह क्षत्रिय जाति नहीं है यह वाक्य
कर्ण को सुण कर के लज्जित होकर के धनुष
के रख दिया ॥ क्यों के जो गुण कर्म से जाति हो
ती तो कर्ण लज्जित होकर के धनुष को क्युं धर
ता कर्ण में कौनसे गुण नहीं समझी थे परन्तु सू
त के पालन पोषण करणे से सूत जाति प्रसिद्ध थी
इस ते धनुष को लज्जित होकर के रख दिया ॥
और एक समय गरुड जी को बहुत क्षुधा था
अत्यन्त क्षुधा लगी तब अपनी माता विनता से क
हण लगे के हे मात मैं भोजन चाहता हूं तब मा
ता ने कहा के हे पुत्र तूं अन्न लेने को स
मुद्र में जाओ समुद्र के तट पर निषाद
सरण जो धर्म भ्रष्ट है तिन्ह को भक्षण
करो परन्तु एक काम करणा उन में जो को
ई ब्राह्मण जाति का होगा तो उसको

मद्राण मत करया यह माता के वाक्य सुण कर ग
रुड जी कहणे लगे के हे मात मैं ब्राह्मण जाति कौ वि
स्तार हे से पछाणुं आने बाद जणों मेतं व मात
का कहा के भक्षण करणे के घर पजिए के खाणे
से कंठ मे अग्नि लग जावे पीतो उसी वखत जा
ण लेना के यह ब्राह्मण जाति है उसी वखत उ
गल देणा इस प्रकार माता के वाक्य सुण कर
के गरुड जी जनु जै भक्षण ने को वा सो समुद्र
के पर पहुंचे तब क्षुधातुर पे गरुड जी
निषाद गणों को भक्षण करणे लगे जब कंठ
मे अग्नि प्रज्वलित होणे लगी तब माता का वा
क्य याद आया गरुड जी के याद आया उसी व
खत काल गरुड जी जाण गये के यह कोई ब्रा
ह्मण जाति है तत्काल उगल दीया कहते अब
उस निषाद गण का ब्राह्मण का कौण सा व
कर्म था क्या उस मे ब्राह्मण मे गुण कर्म
थे इस वास्ते जाण जया कि ब्राह्मण जाति ज
न्म से ही है केवल कर्म से नहीं है क्योंकि नि
ण निषाद ब्राह्मण कर्म उस के कोई नहीं
था मगर जन्म से था के वल जाति मात्र ब्राह्म
ण था उस के कंठ मे जाने से गरुड जी
के कंठ मे अग्नि बलते उठे इस से जाती से ब्रा
ह्मण है यह सिद्ध हो गया ॥ कर्म से तो चांडा
ल पन को जाता है इस वास्ते जाति से बी कर्म से बी
ब्राह्मण होइ रहणा चाहे ॥ प्रश्न जाति मिसड

यह सब वाक्य महाभारत के है आदि पर्व मे यह गरुड़जी की कथा है ॥ पालति पन्नगान् भक्षयति इति गरुडः । इन दोनों धातुः से गरुड शब्द बनता है ॥ और तिमिर भास्कर सम्मत खंड चतुर्थ में भी यही कथा है ॥ अब षष्ठ स्कंध के श्लोक लिखते हैं ॥

भा० स्कं० ६ अ० २ श्लो० ८ पथि च्युतं तिष्ठति दिष्ट रक्षितं गृहे स्थितं तद्विहतं विनश्यति जीवत्यनाथो पि तदीक्षितो वने गृहे पि गुप्तो स्य हतो न जीवति ॥१॥ सरकितायनऊगिया गहिज भी ॥ यह दोनों वाक्य यमके धर्मराज के हैं ॥ और भी श्लोक को बलहापित हा जो भ्रात हा चारि हा घव नेरू कृष्णकसको वा पिशुं कुरनु पस्य कीर्तनात् ॥१॥ अपायिच ब्रह्मचारी ति नारायण परा जस्व मीन पुनाति झजेन्द्र सुरा कुंभमिवा पगा ॥ भाग० स्कं० ६ अ० १६ श्लो० ८ एष नित्यो ऽव्ययः सूक्ष्म एष सर्वाश्रयः स्वदृक् आत्म मायागुणैर्विश्वम् आत्मानं सृजते प्रभुः ॥१॥ इस श्लोक से जीव को नित्यता सिद्ध है ॥ जीव नित्य है ॥ अव्यय है ॥ जीव का वाक्य है नारद जी के प्रति ॥ चित्रकेतु राजा का पुत्र सम के प्रति कहता है ॥ अब भा० स्कं० ६ के अ० १८ वे श्लो० लिखते है ॥ भा० स्कं० ६ अ० १८ श्लो० ४ वरुण को पुत्र भृगु वाल्मीक जो हुए चर्षणी नाम करके उनकी माता हुई है ॥ कर श्लो० १२ देह रूप का शिव के कथा छाया वी के विषे पुत्र ४ हुये ॥ इरलाग्द १ अन लाद २ लाद ३ प्रलाद ४ राकसिंह का नाम करके प्रसिद्धी पत्नी है

इ वो हविप्रचित्तिदानवको ताई विचार करके देद
इतिसवकरगुपत्र हुआ जिसके शिरको हरि काट
देते भये॥ फेर प्रह्लाद के विरोचन पुत्र हुआ फे
र विरोचनका पुत्र बलि हुआ फेर बलिके बा
णासुर से आद लेकर के शत पुत्र हुये॥ फेर
भा० स्कं० ६ अ० १८ श्लो० ३३ कश्यप वाक्यम् दि
तिं प्रति॥ पतिरेव हि नारीणां दैवतं परमं स्मृ
तम्॥ मानसः सर्वभूतानां वासुदेवः श्रियः
पतिः ३३॥ श्लो० ४२ नहि को मितु प्रियः
स्त्रीणां॥ यह भी कश्यप का वाक्य दिति के प्रति॥
भा० स्कं० ६ श्लो० ४७ कश्यप वाक्यम् दितिं प्र
ति॥ नहिंस्याद् भूतजातानि न शपेन्नानृ
तं वदेत्॥ न छिन्द्यान्नखलोमानि न स्पृशे
द् यदमंगलम्॥ ४७ श्लो० ४८ नाप्सु स्नायां
न कुप्येत न संभाषेत दुर्जनैः॥ न वसीता
धौतवासः स्रजं च विधृतां क्वचित्॥ ४८॥
भा० स्कं० १ अ० ६ श्लो० १० को वर्धितस्ते वि
जातप्राणे ऽपि पङ्कस्थितः पं.......
मे प्रेसे सा स्कन्द से व को व गी क॥ १०॥
अ० ५० नारी को वैश्यः तस्कर भ्योः से वै प्राप्त
हो निम्न अंगीकृत्य द्रव्यं साधयति॥ १०
भा० स्कं० १ अ० १ श्लो० २२ पर ३४ तक की वैश्य निवि
वाणिक पण व्यवहार सत्ता वे इस वचन से सिद्ध होता है॥ ६

भा० स्कं० ७ अ० १४ श्लो० १७ न ह्यग्निमुखतोऽयं
वै भगवान्सर्वयज्ञभुक् इज्यते हविषा
राजन् यथा विप्रमुखे हुतैः ॥१७ भा० स्कं०
७ अ० १५ श्लो० ७ न दद्यादामिषं श्राद्धे ॥
श्राद्ध मे मांस का पिण्ड न ही देणा न खाना लि०
नवविधा भक्ति सप्तम ७ मे अ० ११ वे मे आरंभ
भा० स्कं० ७ अ० ११ मे ब्राह्मण के लक्षण कर्म वृ
त्ति लिखे है ॥ संस्काराः यत्राविच्छिन्नाः स द्विजो
ऽजो जगाद यम् ॥ इज्याध्ययनदानानि विहितानि
द्विजन्मनां ॥१२ जन्मकर्मावदातानां क्रियाश्च
आश्रमचोदिताः विप्रस्याऽध्ययनादीनि ष
ड् न्यस्याप्रतिग्रहः ॥१३॥ राज्ञो वृत्तिः प्रजा
गोप्तुः अविप्राद्वा करादिभिः ॥ वैश्यस्तु
वार्तावृत्तिश्च नित्यं ब्रह्मकुलाऽनुगः ॥१४
शूद्रस्य द्विजशुश्रूषा वृत्तिश्च स्वामि
नो भवेत् ॥१५॥ अतले भाति प्रसङ्ग न ।
भा० स्कं० ८ अ० १६ मे श्लोक २८ [illegible] प्रति
मा पाषाणादिक की मूर्ति मे के विषे ॥ जल
के विषे ॥ सूर्य के विषे ॥ अग्नि के विषे
॥ गुरू के विषे हरि भगवान का परमात्मा
का पूजन करना लिखा है ॥ अ० १८ मे
नाहं बिभेमि निरयान्नाधन्यादसुखार्ण
वात् न स्थानच्यावनान्मृत्योर्यथा विप्र

अलम्भनात् ॥ ५ का श्लोक है यह ॥ भा० स्कं० ८ अ० १९
श्लो० ४३ जीवकीकरण के विषे ॥ परिहास्य होता
हो ॥ विवाह के विषे ॥ वर की स्तुति के विषे ॥ जीवी
का के विषे ॥ जो प्राण के अपहित के वासे ।
गउ सा के विषे ॥ प्राणों को संकट जो है तिस
के विषे ॥ अनृत न दोषाय जुगु० अ सत्प वो
लने का कोई वी दोष न ही है ॥ इस श्लोक
का ॥ ४३ ॥ भा० स्कं० ८ अ० २० श्लो० १६ व
लि राजा को गुरु ने से दान निषेधा है यह श्लोक लि
खते है ॥ एवं शप्तः स्वगुरुणा सत्यान्न च
लितो महान् वामनाय ददावेनामर्चित्वो
दकपूर्वकम् ॥ १६ ॥ अब न वम स्कन्ध का भा०
भा० स्कं० ९ अ० ४ श्लो० ५३ वे ला का वाक्य
है दुर्वासा ऋषि के प्रति ॥ स्या न मदीयम्
सहविष्णुमताते जोडावसानं द्विवे
रा इसंरोऽभूत भुज्ञाते रागहि सैन्य
दिग्धा का लागमनो परपति रो भावि
ष्यति ॥ ५३ ॥ भा० स्कं० ९ अ० ४ श्लो० ६८ ॥
साधवो हृदयं मह्यं साधूनां हृदयं त्वहं ॥
मदन्यत्ते न जानन्ति नाहं तेभ्यो मनागपि
अर्थ० साधवः मह्यं हृदयं साधु मेरा हृदय है ॥
अहं मैं साधूनां हृदयं साधुवों का हृदय हूं
ते साधवः मद् अन्यत् मेरे ते अन्य को न जाने

सा च संसिद्धौ धातुः साधनोति परकार्यं इति साधुः

न्ति ॥ तेभ्यः साधुभ्यो ऽन्यतमं नाकं स्वपदपि न आनामि ॥ इत्यर्थः ॥ ९८ ॥ भा० स्कं० ९ अ० ६ श्लो० ४ वैष्णवतमन की इच्छा के ते कु पाई देवा कु राजा ॥ भा० स्कं० ९ अ० १८ श्लो० २४ देवयानी का वाक्य है वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा के प्रति ॥ वयं तत्रापि भृगवः ॥ शिष्यो ऽस्या नः पिता सुरः ॥ अस्मद्धार्यं धृतवती शूद्रो वेदमिवासती ॥ ७ ॥ जैसे शूद्र वेद को धारण नहीं करता है अधिकारी नहीं होते इसी प्रकार शर्मिष्ठा भी मेरे वस्त्र के धारण करने को योग्य नहीं है ॥ शूद्र को वेद का अधिकार पढ़ने को नहीं लिखा है कौन से पुराण में ॥ भा० स्कं० ९ मे यह भी श्लोक लिखा है गंगाजी की स्तुति का ॥ यज्जलस्पर्शमात्रेण ब्रह्मदण्डहता अपि सगरात्मजाः दिवं जग्मुः केवलं देहभस्मभिः ॥ १ ॥ श्लोकसू ॥ अब वदणम स्कंध भा० दशम १० स्कंध० अ० २४ पूर्वार्द्ध श्लो० २१ कुषिवाणिज्य गोरक्षा कुसीदं तुर्यमुच्यते वार्ता चतुर्विधा तत्र वयं गोवृत्तयो ऽनिशम् ॥ रो यह वाक्य कहा कान्हा नन्द के प्रति

न पशुं पातीति पशुपः नन्दः पशुपं तं
जनिता सुतः इति मे पशुपांगजाय पाठ है तत
तो इस पद के दो अर्थ है॥ पशुं पातीति
पशुपः नन्दः तस्य अंगात् वसुदे
व तस्मात् जातः श्रीकृष्णः तस्मै पशुपां
गजाय॥ पशुं पातीति पशुपः नन्दः तस्य
अंगाज्जातः श्रीकृष्णः तस्मै पशुपां
गजाय॥ स पिता पशुपोषकः इति
वचनात्॥ पशून्पाति रक्षति इति पिता
उक्त वाक्यो से नन्द जी ने श्रीकृष्ण
को कहते है॥ भा० स्कं० १० पूर्वार्द्धे
अजाजा वो महि अध्या० ३२ श्लोकों का
[illegible] वती टीका मे यह प्रश्न लिखा
है॥ प्रश्न स्तान [illegible] अजा श्रोताओ
स्ता जाव वो स्मृता: [illegible] प्रस
ता मि कि अध्या० पर [illegible]
भा० स्कं० १० पूर्वार्द्धे अ० ४३ श्लो
२७ म [illegible] सप्ता [illegible] नेरवर
श्री [illegible] ति मानजो वा नार

१

स्वजनोऽसतां चितिभुजां शास्ता स्वापि
त्रोः श्रीगुरुः मत्स्युर्भोजपतेर्विराड
विदुषां तत्वं परं योगिनां वृष्णी
नां परदेवतेति विदितो रंगं गतः
साग्रजः ॥ प्रयोजनं बताहेवेनस
हश्रीकृष्णः मल्लानां प्रधानीढुव
वत्र मिव वज्र सदृशो ॥ नृणां नर
वरः ॥ स्त्रीणां मदनो जारः ॥ गो
पानां स्वजनो सम्बन्धी ॥ दुष्टराज्ञां
शास्ता ॥ पित्रोः शिशुः ॥ भोजप
तेः कंसस्य मृत्युः ॥ अज्ञानानां
पशुप्रायो ॥ योगिनां मुतत्वं ॥ यदूनां
परदेवता इति विदितः सन् श्री
कृष्णः प्रयोजनसाहि रंगं गतः
॥१॥ रंगनाम मल्लवाड काहै ॥
भा० स्कं० १०३ अ० ४३ प्र० ८४ ॥
श्लो० ११ वा १२ न ह्येष मभयानि

तीर्थानि न देवा मृच्छिलामयाः ते पुन
न्त्युरुकालेन दर्शनादेव साधवः॥११॥
नाग्निर्न सूर्यो न च चन्द्रतारका न
भूर्जलं खं श्वसनोऽथ वाङ्मनः॥
उपासिता भेदकृतो हरन्त्यघं विप
श्चितो घ्नन्ति मुहूर्तसेवया॥१२
यह वाक्य भगवान को है साधु म
हात्माओं की स्तुति करी है ३ है
श्लोकों से॥ इन से साधु महात्मा
पुरुषों की स्तुति करी॥ प्रत्यक्ष
भा० स्कं० १० अ० ७० उत्रार्द्धे श्लो०
७ मे मृत हुये पितरों का तर्पण
करणा लिखा है॥ इस प्रमाण से
मृत हुये पितरों का तर्पण सिद्ध हो
गया॥ और बहुत ग्रंथों से मृत
हुये पितरों का श्राद्ध तर्पण सिद्ध
है॥ भा० १० उत्रार्द्धे अ० ८६॥
श्लो० २० एवं सारस्वता विप्रा

सारस्वताविप्रा: न्हसो संशयमनुत्र
वन्हवन्हुचे एवेनि जिस:

न्हसौ संशयमत येपुरूषस्यपदांभोजसेवयात
उत्तिंगता:॥२०॥ अर्थ- पुरूषस्य श्रीकृष्णस्य पदां
भोजसेवयात उत्तीर्स्य श्रीकृष्णस्य गतिं भक्तिं ग
ता: प्राप्ता: ॥२०॥ इस्से पूर्व महर्षि भृग्वादिक
सभ सारस्वत ब्राह्मण च्यो पहले सिद्ध हुवा
पश्चात् देशभेद कर के गौड कान्यकुब्जा
दिक होगये ॥ भा० स्कं० १० ३ त्र्याद्धि अ० ९० श्लो०
२८ ॥ प्राप्तपर पर धर्म कृष्णस्य गृहमे
धिनी- प्रासन्न षोडश साहस्त्र महिष्योऽष्ठ
शताधिकम् ॥२८॥ १६ षोडश सहस्त्र १०८ पटरा
णीयाँ भगवान श्रीकृष्णके होति है ॥ इसवाक्य
से पटराणियाँ है ॥ प्रताप ने ति भी स ऊन ॥॥
भा० स्कं० ११ एकादश अ० ३ श्लो० २८ भागं
भागवते शास्त्र ॥ अर्थ - भगवत्प्रतिपादक शास्त्र
इस वाक्य से भागवत का अर्थ जाना जाता है ॥ भ
गवत्प्रतिपादकपणा सबओर हे सोई भागवत का अर्थ है
इसी वास्ते इसको भागवत कहते हैं ॥ श्री
भा० स्कं० ११ अ० १८ श्लो० १५ बिभृयाद्यदि मुनि
र्वास: कौपीनाच्छादनं परम् त्यक्तं न दण्ड
पात्राभ्यामन्यत् किंचिदनापदि ॥१॥
कौपीन चेनामभिकमु कूपपत्तनम है
लौतिकोपीनं पापं तत् साधनं चाल पुरुष
त्तिऊं मपि कौपीनम् ॥ तदाच्छादनम
पि कौपीनम् ॥ भा० स्कं० ११ अ० १७ श्लो० ४८
न्दू कहिं भज्ञेहे श्व: सद्: सारस्वत क्रियाम्

९

केहुश मे कौन भगवद्है सो त्रिनित्तिसे कर्मि ॥२३॥
२॥ भा० स्कं० ११ अ० १५ श्लो० ४ अणिमा महि-
मा लघिमा प्राप्तिरिन्द्रियैः प्राकाम्यं श्रु-
तदृष्टेषु शक्तिप्रेरणमीशिता ४॥
टीका० तत्राह अणिमा १ महिमा २
लघिमा ३ एता देहस्य सं० ॥ प्राप्ति ४
प्राकाम्य ५॥ ईशिता ६॥ वशिता ७॥
प्राकाम्य मु ८ एताऽष्ट सिद्धयो मे
स्वाभावि[illegible]क्यः॥ श्लो० ३ भगवद्वाक्य-
म् ॥ सिद्धयोऽष्टादश प्रोक्ता धारणा योगपार-
गैः ॥ तासामष्टौ मत्प्रधाना दशैव गुण-
हेतवः ३॥ अ० ७ श्लो० २०।२१।२२। वृत्तिपं
प्राप्याऽनुपूर्वाज्जन्मोपनयनं द्विजः ॥१॥
वृत्त्याचारिणो धर्मः ॥ स वेदविहितः ॥ उप
कुर्वाणको १ नैष्ठिकम् ॥ उपकुर्वाणध-
र्मान्याह ॥ अ० ७ मे वा १८ मे चतुराश्र-
मों के धर्म वर्णन करे हैं ॥ और ज्ञानेश्व-
चरित्र पूर्वखण्ड ३ मे चारों वर्णों के धर्म
भी वर्णन करे है ॥ भा० स्कं० ११ अ० २०
पंडित किसको कहते है मूर्ख किसको कहते
है यह वाक्य और योगमार्ग बहुत ही विस्तार से
लिखा है ॥ और वेदान्त विचार भी सविस्तर है ॥

भा० स्कं० १२ अ० २ श्लो० २४ यदा चन्द्रश्च सूर्यश्च तथा तिष्य बृहस्पतिः । एकराशौ समेष्यन्ति तदा भवति तत्कृतम् ॥ टीका० यदा चंद्रसूर्य बृहस्पतीनां पुष्यनक्षत्रे सम कालं एव प्रवेशः तदेव कृतयुग प्रवृत्तिः स्यात् ॥ २४ ॥ श्लो० २५ यदाऽवतीर्णो भगवान् कल्कीर्धर्मपतिर्हरिः । कृतं भविष्यति तदा प्रजा हि ते च सात्त्विकी ॥ २५ ॥ भा० स्कं० १२ अ० ३ श्लो० ५० कलेर्दोषनिधे राजन्नस्ति ह्येको महान् गुणः । कीर्तनादेव कृष्णस्य मुक्त सङ्गः परं व्रजेत् ॥ ५० ॥ ५१ कृते यद्ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः । द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरि कीर्तनात् ॥ ५१ ॥ भा० स्कं० १२ अ० २ वित्तमेव कलौ नॄणां जन्माचार गुणोदयः । धर्मन्यायव्यवस्थायां कारणं बलमेव हि ॥ भा० स्कं० १२ अ० ३ श्लो० २ चतुर्युग सहस्रं च ब्रह्मणो दिनमुच्यते । स कल्पो यत्र मनवः चतुर्दश विशांपते ॥ २ ॥ भा० अ० २ श्लो० ११ क्षुत्तृड्भ्यां व्याधिभिश्चैव संताप्स्यन्ते च चिन्तया । त्रिंशद्विंशति वर्षाणि पर

मायुःक लोन्यूणाँ ॥११॥१२ संभ लग्नाम मुख्यस्य
जाघन्यास्य महात्मनः भवने विघ्न पशास : क
लिकर्णी दुर्भविष्यति ॥१२॥ भा० स्कं० १२ अ० ४ ध्रु
कदेवबाबचनम् ॥ चतुर्युग सहस्त्रं वे ति० अ
यह कल्पका प्रमाण है ॥ अब प्रलय लि० है ॥
प्रलयश्चतुर्विधः ॥ प्राकृतिकम् १ प्रासं
तिकम् २ नैमित्तिकः ३ नित्यम् ४ ॥ प्र
लयः प्राकृतवर्षात्मक प्रोक्ष्यते सति
महदहंकार पंचतन्मात्ररूपाः प्रकृति
यः सप्त लयायु कल्पन्ते ॥ एषः प्राकृ
तिकः ॥ प्रासंतिकलयो माद्वः ॥ स्मृ
यते ॥ यत् ब्रह्मणो दिनान्ते तावान् प्रलयः
ब्राह्मी रात्रि यत्र यस्मिन् ब्रह्मा त्रै ॥
लोक्यो लोकाः प्रलयाय कल्पन्ते ॥ एषः
नैमित्तिक प्रलयः ॥ एकं नित्यम् ॥
चतुर्थोध्याप अभवे नोलम् ॥ श्लो० २ प्रलयम् ॥
भा० स्कं० १२ अ० ८ मे पुराणों की संख्या लि०
ब्राह्मं १ पाद्मं २ वैष्णवं ३ शैवं ४ लैङ्गं ५ सगारुडं ६ ना
रदीयम् ७ भागवत ८ आग्नेयं ९ स्कांद संज्ञितं १० भविष्यं
११ ब्रह्मवैवर्त्तं १२ मार्कण्डेयं १३ सवामनम् १४ वारा
हं १५ मात्स्यं १६ कौर्मं च १७ ब्रह्माण्डं ख्यमिति त्रि
षट् १८ ॥ यत मतिप्रसङ्गेन कौरन्तः ॥

मा० स्कं० १२ अ० १३ श्लो० ४ ब्राह्मं दश सहस्रा
णि पाद्मं पंचोनषष्टी च श्रीवैष्णवं त्रयो
विंशत् चतुर्विंशति शैवकम् ॥ दशाष्टौ
श्री भागवतं नारदं पंचविंशति मा
र्कण्डं नव वाह्नं च दश पंच चतुः
शतम् चतुर्दश भविष्यं स्यात् तथा
पंचशतानि च दशाष्टौ ब्रह्मवैवर्तं
लिंगमेकादशैव तु चतुर्विंशति
वाराहमेकाशीति सहस्रकम् ॥ स्कां
दं शतं तथा चैकम् ॥ वामनं दश कीर्ति
तम् ॥ कौर्मं सप्तदशाख्यातं ॥ मात्स्यं तत्तु
चतुर्दशम् ॥ एकोनविंशत् सौपर्णम्
ब्रह्माण्डं द्वादशैव तु ॥ एवं पुराणसं
दोहश्चतुर्लक्ष उदाहृतः ॥ तत्राष्टा
दश साहस्रं श्रीमद्भागवतमिष्यते
॥९॥ इदं भगवता पूर्वं ब्रह्मणे नाभिपंक
जे स्थिताय भवभीताय कारुण्यात् संप्रकाशि
तम् ॥१०॥ सर्ववेदान्तसारं हि श्रीमद्भागवत
मिष्यते ॥ च्युतो

यावैष्णवानां यथा शंभुः पुराणानामिदं तथा क्षेत्राणां
चैव सर्वेषां यथा काशी ह्यनुत्तमा तथा पुराणव्रा
तानां श्रीमद्भागवतं द्विजाः॥ इतने नौ कन्यु
श्री नर्क प्रति॥ संदेह नाम सम्मुख का है॥
वा एवं प्रत्ति पुराणम्॥ सोपर्णं गारुडं॥ पु॥
भा० स्कं० १२ अ० १२ श्लो० १३ प्रौष्ठपद्यां पौर्णमा
स्यां हेमसिंहसमन्वितं ददाति यो भागवतम्
स याति परमां गतिम्॥ १३॥ भाद्रपद पूर्णिमा १९
का नाम प्रौष्ठपदी है तिसको दान करके देना॥
भा० स्कं० ११ अ० ५३॥ ध्येयं सदा परिभवघ्नम
भीष्टदोहमिति॥ अर्थ- हे प्रणतपाल हे महापुरु
षतेतव चरणारविन्दं हे बन्दे॥ कथंभूतं चरणारविन्दं
ध्येयं ध्यातुं योग्यं ध्येयं सदैव ध्येयम्॥ ध्येय पद्य है तवु
इन्द्रियेकुटुम्बादिभिः यः परिभवः तिरस्कारस्तं हन्
तीति तथा तत॥ किंच- अभीष्टदोहं मनोरथप
रकम्॥ किं च तीर्थास्पदम् जाह्नव्याश्रयत्वेन पर
म पावनम्॥ शिवविरिंचिनुतं स्तुतं महतमम्॥ पुनः
शरण्यं प्राज्ञपयोज्यमृत्युस्वात्मकमृत्युसेवधिः॥ पुनः कथं
भूतं॥ भृत्यार्तिहं॥ भृत्यमात्रस्य प्रार्तिपीडां हन्ति॥
॥ पुनः कथंभूतं भवाब्धिपोतम् संसारसागरस्य तारकम्
इत्यर्थः॥ ननु ब्रह्मादिभिः स्तुत्यं है तो प्राकृतस्य
पुरुषस्य जोचरः कथं स्यात्॥ इतीचेन्न भृ
त्यार्तिहं तु यस्य कस्यापि भृत्यमात्रस्यार्तिं हन्ति
हन्तु॥ केवलं नाम ... कार्ति नाम लेहि ता॥ इत्यर्थः॥

यत्कारुण्यदृसाजन्मरणपितराज्यतलत्रीधमिं
थ्यं॰ प्राप्य वच सा पद ॰ गादन्नरणं पापान्तिगं दपित
चेप्सित मन्वधावद्ध्न्दमनगाधरूपते चरणारविन्दमहं
॰ मर्थ॰ हे धर्मिष्ठ हे महाप्रभु ते तव चरणारविन्दं ऽहं
वन्दे ॥ कथंभूतं चरणारविन्दम् ॥ यत्र चरणारविन्दम्
सद्दृसा जन्मसरे पितराज्यतलत्रीसयको॰ प्राप्य वचसा
श्रीगुरोर्द्दशारूप्य स्पवचसा॰ मरणं॰ प्रणमत् ॥ ७
नः का हर्षं ॥ देवपितयासीत पादप्सितं वांछितं दद
मायांमत् जीकावनमत् गं॰ मन्वधावत ॥ ॰ मतऽ
धावत ॥ पीछे दौडते हुये ॥ एतादृशं ते चरणारविन्दं
ऽहं वंदे ॥ २ ॥ यह दोनो श्लोक रत्नाकर ग्रंथ के
के है । इससे भगवान की स्तुति करनी चाहिये
भा॰ स्कं॰ १२ तक के श्लोकों का संग्रह है समाप्त है

॰ अब महाभारत के श्लोकों का संग्रह है संक्षेपमात्र
से लिखते है ॥ महाभारते विराटपर्वणि ॰ अ॰ ॥
७८ ॥ ॰ अश्वत्थामा वाक्यम् ॥ चातुर्वर्ण्यस्य कर्मा
णि विहितानि स्वयंभुवा धनं येर धिगन्तव्यं
यच्च कुर्वन्न दुष्यति ॥ १ ॥ ॰ अधीत्य ब्राह्मणो
वेदान् याजयेत यजेत वा ॥ क्षत्रियो धनुराश्रि
त्य यजे चैव न याजयेत् ॥ २ ॥ वैश्योऽधिगम्य वि
त्तानि ब्रह्मकर्माणि कारयेत् ॥ ब्रह्मकर्माणि के
षां वेदोक्तकर्माणि ॰ याधानादीनि ॥ शूद्र श्रु
श्रूषणं कुर्यात् त्रिषु वर्णेषु नित्यशः ॥ ३ ॥ वंच

प्रथम कापी

॥ चौंसठ पेरण व्रत की विधि वी लि. है ॥

सर्वसार संग्रह ॥ इस कापी मे संध्या भाष्य वी लि
खा है और धर्मशास्त्र के वा
क्य वी लिखे हैं ॥ और भग
वत्सूत्र अनेक प्रकार वी लिखा है ॥

और राज नीति के वाक्य वी है
और प्रायश्चित्तों का एक विधि पत्र वी लिखा है

कर गपत्र मे माह ॥ और न्यास
मि को मध्यात् मा दो द्वि न्पे न वे
तू तर्जनी मूल पर्वे तं जपे द्
स पर्व स १ करग पो प्रष्ठो त र
पर्प न पेव नु त तदाधि वं जप

ॐ कुं पं इं भ्र हा कु प्प त्र
जि पं ज भ्र मा न ा स्व दा ति ल
कं वे हि जः कु पा तु चं द्रे न पह

चार प्रवस्था है ॥ १६ षोडषा भी मार है

ग्रा ... गोम प्रधानम ... सन पंच दिन मुक्त
... लिखे है ... दोष वीत
धारणा प्रयोग विधि: यह वी लिखा है

पात्रां दि शुद्धि: धर्मशास्त्र के वाक्य इस में
शिव दृग ज न बिल्वपत्र प्रभ्य दिखलाती दल पर ही है

प्रपतत्वात्यथा विधि रनुष्ठानात उपचि
तं संचितं प्रभ्रमं मेव नाश यतीति
प्रायश्चितम् ॥ यह प्रायश्चित का अर्थ है
॥ प्रश्न ॥ प्रायश्चित्त विकि साच ज्योतिषं
धर्मनिर्णय: वीना शास्त्रेण यो ब्रूया
त् तमाहुर्ब्रह्म घातक: १ ॥ प्रायश्चित का
अर्थ ॥ सर्व श्रद्धा दृष्टा ऐ पर तानि
हि तेन मान सत्कारे रात्मे स्वयं
कृत्वाति सत्य हितः ॥ अर्थ स्मृत्यादि
श्लोक राजनीतिक ॥ इतो बाह्य तत्वतः प्राप्य
संवृणन्त वेत ■ सम्यक् ॥ कृत मा द्विन
न्नु आ नामित मत ■ घावताम् २

प्रवक्ता धर्मशास्त्राणि प्रायश्चित्तं वदन्ति ये सा
प्रायश्चित्ती भवेत् पूतस्तत्पापं तेषु गच्छति १ लोभा
द्वा यदि वा स्नेहान् मोहाद्दत्ता नतो ऽपि वा कु
र्वन्ति पर्षद ये तु तत्पापं तेषु गच्छति २
प्रकीर्ण स्य व कार्ये वा तो वा प्रत्नेन बोड शु: प्रा
प्रायश्चित्तादि मंहति स्थिया रोग ■ ■
वचेति ॥ पन्थे वर्षे मुच्यते प्रायश्चित्त
वत ... अनुशासन भी ... आ नां प्रश्न

ना योजविमुच्यमि: वैतसीं वृत्तिमास्थित:॥ वैतसीं
हीन वृत्तिमुच्य॥ महाभारते द्रोण विराटपर्वणि अ०
५० श्लो० २३॥ अश्वत्थामा वाक्यम्॥ सूत त्वमेषां
न हि कृतम् सारथी चन्दने यथा कर्म कारपि
आ: सूतत त्वं किं विदुरो ब्रवीत्॥२३॥ सर्वे षांहि
वर्णानाम् द्विविधम् जन्म: पानिजं संस्का
रजं चैति॥२४॥ महाभारतपर्व विराट अ० ५१
श्लो० १० वेदानां ब्राह्मणानि हिंसर
तनमु जाम दग्न्य मतेराजन्नु को द्रोणः
गे को भवेत्॥ यह भीष्मजी का वाक्य है॥ इस
वाक्यसे पुराणोंका ग्रन्थ इतिहासका
होना॥ वेद नहीं होना यह समझ सिद्ध हो
गया है॥ ब्रा० जाति पर्वेश्वम् दूर्वे के लक्षण
भागवत स्कंध सप्तमा में लिखे हैं सो लिखते हैं॥
भा० स्कं० ७ अ० ११ श्लो० २१ जाती विचित्रा शाती नया
याजर्षिनौ अनम् विप्र वृत्ति स्तुधेयम्॥ प्रो
पस्थी चोतस्थेत्तर॥२८ जय मंत्री मोहमां वृत्ति म
नापदि भगेन्नर: क्षत्रो राजन्य मापन्नस्य
वैश्या मपि सर्वश:॥२७ ऋताम्बतानामा
मितौ २० ऋत मुञ्छ शिलं प्रोक्तम् तेन
सत्यानृतं तु वाणिज्यं श्ववृत्ति नीचे
सेवनं वर्जयेता सदा विप्रो राजन्यश्च
जुगुप्सितम्॥ सर्ववेदमयो विप्र: सर्व
वेदमयो नृप:॥२०॥ रणयमाः रत्न: ...

शमो दमस्तपः शौचं संतोषः क्षान्तिरार्जवं ज्ञानं
दया च्युतात्मत्वमुसत्यं च जगन्मतं दानम् ॥
२१ श्रौ पंचवी पंच तिक्त जपस्याग: ॥ प्रा ॥
जपः दाम प्रजलपता प्रसाद ज्ञ रक्षा च वद
मतं दानम् ॥ २२ ॥ देवगुर्व च्युते भक्ति
मत्त्वर्गपरिपावनम् ॥ आस्तिक्यमु
धर्मोन्नितम् ॥ नैपुण्यं वैरूपलदानम्
२३ म पुरुष संनतिः शौचं सेवा स्वामि
न्युऽमायया अमं गेपज्ञोद्धस्तो पसस
जोविप्ररक्षणम् ॥ २४ स्त्रीणां च पतिदे
वानां तद्द्रु ... पाऽनुकूलता ॥ तद्बं
धु ष्वनु वृत्तिश्च नित्यं तद्व्रतधार
णम् ॥ २५ ॥ संमार्जनोपलेपाभ्यां ग
हमंडलवर्तनैः स्वयं च मंडिता नि
त्यं परिमृष्टपरि छदा २६ ॥ कामै
रुच्चावचैः साध्वी प्रश्रयेण दमेन
च वाक्यैः सत्यैः प्रियैः प्रेम्णा काले
काले भजेत्पतिम् २७ संतुष्टालो
लुपा दक्षा धर्मज्ञा प्रियसत्यवाक्
॥ अप्रमत्ता शुचिः स्निग्धा पतित्वप
तितं भजेत् ॥ २८ ॥ या पतिं हरिभा
वेन भजेच्छ्री रिव तत्परा हर्यात्मना हरे

ली के पत्या श्रीरि वृ मोदते ॥ २६ ॥ यह चारो वं
र्णो के लक्षण कहे हैं ॥ मगाडी चारो आश्र
मों के वी इस स्कंधमे लक्षण लिखे हैं ॥ औ
रण का दशस्कंधमे वी लक्षण लिखे हैं ॥ मनु
स्मृति याज्ञवल्क स्मृति मे वी लिखे है ॥ गरु
ड़ मे वी लिखे है ॥ प्रलय प्रति प्रसंग ड्ंन ॥।।

महाभारत मे ब्राह्मण लक्षण ॥ औरब्रह्मबंधु लक्षण
का लक्षण लिखा है ॥ जे लवी जे सम्पन्नो
मंत्रे संस्कार वर्जितः जातिमात्रो पजीवी च
भवेद् ब्राह्मणः स तु ॥ १ ॥ गर्भाधानादि
भिर्युक्तः तथोपनयने [illegible] न च वेन
कर्म वि [illegible] न चाधीतः स भवेद् ब्राह्म
णब्रुवः ॥ २ ॥ औरअत्रि स्मृति मे वी
१० प्रकार के ब्राह्मणों के लक्षण लिखे
है ॥ औरमहाभारत के श्लोक लिखते
महाभारते शांति पर्वणि मोक्षधर्मे आचार वि
धि प्रकरणे भीष्म युधिष्ठिर संवादे ॥ पुरीषं वै
दिवा मूत्रं ये न कुर्वंति मानवाः राजमा
र्गे गवां मध्ये धान्यमध्ये शिवालये मजा
गारे तथा तीरे ये न कुर्वंति ते शुभाः ॥ १
सूर्ये संदे पतिष्ठत न च सूर्योदये स्व
पेत् ॥ सायं प्रातज पे संध्यां तिष्ठन् पूर्वां
तथोत्तरां ॥ २ ॥ जो सदैव [illegible] नरव

खादितपनरा: नलोपहि एषां तुषुको नेह
ग विमतेमहत ॥३॥ नचोदाहि त्यघघंते
नवेनजां परगल्लियम् ॥ मैथुनेपरमे
धर्मेगुह्ये चैवसमाचरेत ॥ गुह्योमे
॥४ धायंमातर्मेनवाराणाञ ॥ नरवनि
मितिमुनानराभोजनेद्रुम: [illegible]
[illegible] पवा.री: तपामवेत ॥५॥ नाद्र
पादास्चपेन्नियु ॥ नाजोप्रतोपचेत गद्ध
मु ॥ मुखेनाग्निंनधमेत ॥॥ नैथुनेभार्या
महाभारत विराटपर्व अ० ५ श्लो० १५ शात्रो
रपिगुणाञादौ पावाच्याजरोरपिस
वेषासर्वे पतनेनपुत्र रिक्ष हितंव
देतपह स्वच्यातावाक्य है भीष्म
जीके प्रति ॥ महाभारते विराटपर्व गति
नदीजलं केशवनारिकोतुनेजाक
बोनामनगाणि स्त्नु: लपोकुलं।
वेषधर: किसी तीजो बावयं नश्च
तिचोच गाव: ॥१॥ अर्थ० हे नदीज
नधाञ्जा पतेति नदीज भीष्म हेनाक
एषः प्रजा नौवेषधर: स्त्रीरूपधा

नामो वच्चः ॥ नाम नाम अर्जुन के च का है १ प्रश्नः की० न

रः किरीटी ॥ अर्जुनैः ॥ पैं दुर्योधनं जित्वा प्र

व कपुष्मा कं गाः नेष्पाति ॥ अतः तं दुर्योधनं प्र

वर हृ ॥ कथं भूतः किरीटी तत्कृः शाव

नारि के तुः [redacted] पुनः कीदृशः ॥

[redacted] नगा कयेः [redacted]

[redacted] ॥ प्र

वर हृणु धातु से प्रवप्रयोग है ॥ अर्जु

गतिस्थानार्जनेषु धातु से अर्जुन

सिद्ध होता है ॥ उन प्रत्यय का है

॥ प्रीति मत्वात् ऋजुकमे करत्वाच्च अर्जु

नः यह अर्थ अर्जुन का है ॥ किरीटी ॥

किरीटमस्यास्ति ॥ उग्रापाकेण मदत्तमु

कुटं तोदानव वधे भैः किरीटं नाम्ना स

र्पो भवत्तेनाह में किरीटिनम् ॥

अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाह

नः ॥ बीभ० यह दश नाम अर्जुन के विराट

पर्व में लिखे हैं जो प्रातःकाल स्मरण १० नाम

का करलेवै तो सर्व पाप नष्ट हो ॥ श्री

तत्केशास्त्र पराव रूपविनं तस्यारि नीराके कस्मात्सः केतु

ध्वजो यस्य सः तत्केशस्य आरि केतुः ॥

नंऔवद्दास्तदा कृ पःव द्दा नामा नम्मे तिवितर्कनि
श्चितमृवा ऽअर्जुनः इत्यर्थः ॥ पुनः कीं॰ नगारि
स्तनूः ॥ श्रोतव्य द्वौ नगा वगा वित्यमरः ॥
नगारिः इन्द्रः तस्यस्तनूः उ गः ऽअर्जु
नः ॥ एषः ऽअर्जुनावेषधरो कीरीटी पंडुपोध
नंजिता ऽअधवः कुब्जाके जाः नेष्यतेऽप्र
ताःकार [illegible] एनत् तं दुर्पोध नैः ऽअवरद्वो ॥ इय
॥ भागवत महाभारत के श्लोक समाप्त हो गये
ऽअब गर्गसंहिता के श्लोको का संग्रह लिखते

गर्गसंहिता का जो लोकखण्डे ऽअध्याय ५ मे कथा सु
हहै ॥ वसुदेव पूर्वजन्म मे कश्यप था देवकी ऽअदि
तिथी ॥ पश्नि सुतपा नाम कर कवी थे ॥ सूर जो था
सो प्राण वसु था ॥ उद्धव जी वसुदेव पे ॥ ऽअक्रूर
पूर्वजन्म मे दक्ष था ॥ कुवेर हृदीक नाम करके
राजा था ॥ कृतवर्मा ऽअपांपति था ॥ कंस पूर्वजन्म
मे कालनेमि था ॥ शाकटासुर पूर्वजन्म मे उत्कच
था ॥ उत्कच पूर्वजन्म मे हिरण्याक्ष का पुत्र था । के
शिनाम दैत्य हो जाता था ॥ तृणावर्त पूर्व पांडु देश
मे सहस्त्राक्ष राजा था एक काल मे स्त्रीयों के सा
थ रमण करता था दुर्वासा ऽआगये उन्हको ऽआये
हुवों को प्रणाम नहिं करी तब शाप दे दिया तु राक्ष
स हो द्वापरांत मे कृष्ण तेरा उद्धार करेंगे ॥
[illegible] दक पूर्वजन्म मे द्रोण नाम वसु था ऽअष्टव
सुवों के मध्य मे ओर धरा [illegible] थी

उन्हो तप करके गंगाजी को प्रसन्न करके गंगाजी को वर
दे दिया के तुम मंगल जन्म ले नंद यशोदा के
घर जे कृष्ण तुम्हारा पुत्र हो जाय तुम्हें जो वर मांगा
है कि कृष्ण हमारा पुत्र हो उसके चरणों में हमारी
प्रीति हो सो तुम्हारा मनोरथ द्वापर अन्त में हो जाय॥
द्रोणाचल पर्वत का पुत्र गोवर्द्धन पर्वत होता भ
या दूसरे जन्म में भारत वर्ष विषम दक्षिण दिशा
की पश्चिम तः गोवर्द्धन जन्म लेने में पन्न
द्रोणाचलस्य च॥ जो लोकते विरजा नदी
के वेग को मंद करके यमुना जी की उत्पत्ति
हुई कृष्ण के वाम पादाङ्गुष्ठ से और कृष्ण के
दक्षिण पादाङ्गुष्ठ से गंगाजी की उत्पत्ति हुई
फेर ध्रुव मंडल में आई फेर ब्रह्मलोक को भेद कर
ब्रह्म मंडल में फेर इन्द्र लोक में फेर सुमेरु के
अधिष्ठित पर स्थित हुई फेर गंगाजी तो हिमाचल के
अधिष्ठान पर स्थित हुई और यमुना जी कालिन्द
पर्वत के शिखर पर प्राप्त होकर चली इससे
सो कालिंदी नाम यमुनाजी का है॥ और यमरा
ज की भगिनी होने से यमुना कहते हैं॥ सूर्य
की पुत्री भी हुई॥ फेर कृष्ण के निमित्त तप क
राके कृष्ण की पटरानी हुई यह उत्पत्ति य
मुना की कथा कही है॥ श्लोक प्रमाण॥ श्री

श्री वृन्दावन खण्ड मे अ० १३ मे पृ० ३३ पर पूतना की पूर्व जन्म
की कथा ॥ पूर्व जन्म मे बलि राजा की पुत्री रत्नमाला नाम
कर करकी वामन भगवान को देख कर एक पुत्र वत्सल के
रती भई जो मेरे असा पुत्र होवे तो मै इसको अपणे स्त
न प्याऊं पर इसके मन का विचार वामन भगवान्
जाण गये तब पर कहा के द्वापर नाम मे मेरे को तू
कंस की भेजी हुई दुष्ट बुद्धि से विष के स्तनो के
प्यावेगी उसी वखत मै तेरा मोक्ष करूंगा तू पूत
ना नाम कर के दासी होगी कंस के यहां रही
कंस तेरे को जो कुल मे भेजेगा फेर मे तेरा स्तन पान क
रूंगा के र तेरा मनोरथ भी पूर्ण होगा और मोक्ष भी होगी
अस्तु ॥ वृन्दावन खण्ड अ० ४ वत्सासुर पूर्व जन्म मे मुरु
दैत्य का पुत्र था प्रमीलो नाम कर के वो एक वक्त मे वशिष्ठ
जी के आश्रम पर जाके वशिष्ठ जी की नंदिनी
नाम कर के गौ को ब्राह्मण का रूप धार के मांगता हुवा
तब वशिष्ठ मुनि उसके हृदय के अभिप्राय को जाण
गये तत्काल उसको शाप दे दीया के तू वत्सासु
र नाम कर के दैत्य हो द्वापर के अन्त मे कृष्ण तेरा
मोक्ष करेंगे ॥ बकासुर पूर्व जन्म मे हयग्रीव ना
म कर के दैत्य था उसका पुत्र उत्कल नाम कर के था
एक समय युद्ध मे अमर देवतावो को जीत कर के
इन्द्र के छत्र पर हाथ पाया फेर जाजली मुनि के
आश्रम मे मछल्यां को पकड़ता हुवा तब जाजली मु
नि को शाप दे दीया के तू बकासुर हो द्वापरान्त
मे कृष्ण तेरा मोक्ष करेंगे ॥ अघासुर पूर्व जन्म
मे शंखासुर दैत्य का पुत्र था अष्टावक्र मुनि
को देख कर [illegible] स्वीकार ता हुवा तब मुनि को

स्वाति नक्षत्र [redacted] तुल लग्न मे मध्याह्न मे जन्म हुवा थ

दास देदिया को तुं स्वर्ग अघासुर नाम कर कहै पहले फेर मनि
उसको प्रसन्न करते व कहा के द्वापर तमे कृष्ण होगा
सो तेरा उद्धार करेंगे ॥ धेनुकासुर पूर्वजन्म मे बलि का पुत्र
था दुर्वासा ऋषि को शाप दे दिया था वो तुं खर
गर्दभ हो द्वापरान्त मे [redacted] मोक्ष होजा ॥
दुर्वासा का ध्यान भङ्ग कर दे दिया था इस कारण शाप
दे दिया [redacted] बलदेवजी से तेरा मोक्ष होगा
॥ ओ दावअग्नि गुरो नी है ॥ माया पृथ्वी तें कुंभके ॥
पुष्कर प्रध्यान दें ॥ कुरुक्षेत्र रवि जा है ॥ चैत्र
हेतु का छ पावे ॥ फागुन नैमिषे त पाए का दर्श स
कर च कार्तिक्यों गुरा मति दे जन्माष्टम्यां प्रध्यो
पृथ्वी [illegible] खाड वेद्या द शौ दिने कार्तिक्यां पूर्णी
मायां तु वट अरु महावटे मकरा के प्रयागे तु वे
ष्ट प्रत्यागि है वे [redacted] ध्य तो ॥ प्रयोध्या पां
सपुती रैया रामनवमी दिने एवं शिव चतुर्द
श्यां वैजनाथ प्रभु में दिने ॥ १ ॥ जरासंध हाथी व तो
दुःख रहे ॥ दुर्योधन पूर्वजन्म मे कलि राजा था वे
ल देव जी को कह दिया था को तुं धृतराष्ट्र
का पुत्र होय पर वध पावल भद्र खण्ड की है ॥ वे
ल देव जी की स्त्री रेवती थी वो है पूर्वजन्म मे
वैवस्वत मनु की पुत्री थी कुष्मती नाम कर के
थी ॥ बलदेव जी का जन्म भाद्रपद कृष्णा षष्ठी
को हुवा है ॥ कृष्ण का जन्म भाद्र कृष्ण अष्टमी
को हुवा है रोहिणी नक्षत्र मे अर्द्ध रात्रि के वि ॥

वलभद्रखण्डमे वलदेवजीकाप्रध्याऊ लिखाहै
प्रकृति१पटल२के वचे ३ सो वराज ४ स हस्त
नाम ५ यह प्रध्याऊ लिखाहै ॥ वैष्णव विष्णु
लोक कोजाते है ॥ शिवलोकमे शैव जाते है ॥
स्मार्तजो पञ्चदेव पूजनेके करणेवाले है ॥
सो स्वर्ग मेजाते है ॥ गणेश सूर्य शिव विष्णुः ।
सूर्य्य यह पञ्च देव है इनकेपूजनकर
णे वाले स्मार्त स्वर्गमे जाते है ॥ पापी नरक
मे पडते है ॥ यह कथा विज्ञानखण्डकी है ॥
और भगवानके पूजनकी विधि वोइसी विज्ञ
ानखण्डमे है ॥ [illegible] कुष्मण्डकोप्रत्तीको वी
कुष्मतीकोभक्तकोशापदियापापाकेतुकारणहो
फेर वो हुभक्त वामनभगवानकोकाणवारद
यापायहकथावलभद्रखण्डकी है ॥ उग्रसेनके
बडाभ्रातादेवकनामकरकथा उसकोपत्रीदे
वकीथीमथुरानासीथे उग्रसेन पूर्वजन्ममेम
रुतराजाथ्या ॥ फेर यदुराजाउग्रसेनप्रगटहुए है ॥
कार मथुरामे राज्यकरा यह कथा गर्गसं०की है ॥
मंगलकी माता पृथ्वी हुई पिता [illegible] स्व[illegible]
के भगवान हुये है ॥ यहवलभद्रखण्डकीक०
राजोंके पुत्रपौत्र विष्णुखण्डमे प्र० ४४
मे लिखाहै ॥ रागरागिनीयोंके पुत्रादि वाव
र्णनकरहे ॥ प्रलम्ब ॥ माधुर्यखण्डमे य
पञ्चोवक लिखाहै ॥ प्रकृती के [illegible] के कनेमे कान्ति
पुत्रनाकूत कदचमूलवतीत्रवेणीयवधछवितासपाली

वनमालीविनीतमङ्गलानि ॥२॥ माधुर्य्यखण्डमे
पञ्चराजीका पञ्चाङ्ग है ॥ कवच १ पटल २ पद्धति ३
स्तवराज ४ सहस्रनाम ५ यह पञ्चाङ्ग है ॥ और राधाकी
स्तुती महात्म और एकादशीनिरणय यह है ॥ और म
थुराखण्डमे सरस्वतीस्तोत्र है ॥ और द्वारकाखण्डमे
श्रीमद्भागवतमहात्मभी लिखा है ॥ गंगा महात्मभी
लिखा है ॥ इसी खण्डमे गोपीचन्दनमहात्म भी
लिखा है अ० १६ मे ॥ और नृगकूपमहात्मभी लिखा
है ॥ द्वारकापुरीके समीप प्रभासक्षेत्र है वहांपर
नृगकूपभी है उसीके समीप चक्रतीर्थ है ॥
जहांपर गजेन्द्रकी मोक्ष हुई है ॥ गोमती
नदीभी तहांसी है ॥ सिंधुसंगमभी कृपा है ॥ जो
पीपोंकी जन्मभूमिभी उसीपर है ॥ गर्गसंहिता
श्रीमथुराखण्ड अ० १२ मे गोपालस्तोत्र पवे श्रुद्र
के स्वभावजकर्म लिखे है ॥ शमो दमस्तपः शौचं क्षां
तिरार्जवमेव च ज्ञानं ~~[illegible]~~ विज्ञानमास्तिक्यं ब्र
ह्मकर्मस्वभावजम् ॥१॥ शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे
चाप्यपलायनम् दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं क
र्मस्वभावजम् ॥२॥ कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यक
र्मस्वभावजम् ॥ परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि
स्वभावजम् ॥४॥ इति ॥ गर्गसंहितायां श्रीवृन्दाव
नखण्डे अ० [illegible] श्लो० १० स्वायंभवान्तरे पूर्वं नाम्ना
वेदशिरामुनिः । विंध्याचले तपोऽकार्षीत् भज
वर्षसमुद्भवः ॥१॥ तदाश्रमे तपःकर्तुं प्राप्तो ह्यश्व
शिरामुनिः । तं वीक्ष्य रक्तनयनः प्राह वेदशिरारु
षा ॥२॥ मन्माश्रमे [illegible] वपमाकृष्यास्त्वं स्वदने नाहि प्र

न्यत्र ते तपा योग्या भूमि नृगस्ति तपोधन ३ ॥ नारद
उवाच ॥ श्रुत्वाथ वेदशिरसो वाक्यं प्रश्वशिरा
मुनिः क्रोधयुक्तो रक्तनेत्रश्चाह तं मुनिपुंगवम्
४ ॥ प्रश्वशिरा उवाच ॥ महाविष्णोरियं भूमिर्न
ते मे मुनिसत्तमः कीर्तिमिच्छेनि भिक्षान्नं न कु
तं तपस्तु त्वमम् ॥ ५ ॥ श्वससि सर्प इव वृथा भोजय
क्रोधं करोषि हि सदा सर्पो भव चाचिरेण महा
ते गरुडाद्भयम् ॥ ६ ॥ वेदशिरा उवाच ॥ त्वं महा
दुरभिप्रायो लघुज्ञो हे महोधमः काकवत्सर्वका
कदुवक्तोच्चैः काको भव दुर्मते ॥ ७ ॥ सो यह प्र
श्वशिरा काकभुशुण्ड ऋषि हुवा है ॥ और वे
दशिरा का तो यह मन सर्प हुया ॥ प्रश्वशि
रा ऋषि के शापते ॥ और वेदशिरा ऋषि के
शापते प्रश्वशिरा काकभुशुंड हुवा यह अ
के दूर्जन कहे है ॥ वोह काकभुशुंड ऋषि
रामायण को जानता हुया गरुड जीके प्रति
फेर वोह काकभुशुण्ड दशप्रचेतस हुया ॥
प्रचेता का पुत्र वा हे सम मन्वन्तर मे राजा हुवा
॥ कद्रु सर्पो की माता हुई है उसके पुत्र
शतानन्न महाफणां वाले सर्प हुये उसी को
पुत्र [illegible] का तो ये था फेर वोहि कद्रु से पै
दा हुई से हि एकी बलदेव जी है ये शेषाव
तार ॥ पहले परमात्मा भगवान को आज्ञा हुई थी
शेषजी को के तुं पृथ्वी को धारण करले उ
सकी आज्ञा से पृथ्वी को धारण किया था वो

किसे बजी है जो अब बलदेव जी है ॥ शंखचूड पू
र्व जन्म मे श्रीदामा नाम करके था भगवान
का द्वारपाल था राधिकाजी को शाप दे दिया था के तूं
राक्षस होवेगा फेर शंखचूड हुवा ॥ भगवान को
कह दिया था के जो पीछो के रास मंडल मे वैवस्वत
मन्वन्तर मे मै तेरा उद्धार करूंगा ॥ श्रीदा
मा को बी राधिकाजी को शाप दे दिया था के शत
वर्ष पर्यन्त श्रीकृष्ण का वियोग होगा बीछो
ग होगा ॥ फेर भगवान को बी राधिकाजी को
कह दिया था के वाराह कल्प मे हे राधे मै ते
री साथ निरन्तर रहूंगा ऐसे वर करूंगा ॥ ए
ह कथा ब्रह्मवैवर्त खण्ड की है ॥ मलयासुर पू
र्व जन्म मे हूहू गंधर्व था उनने कुवेर जी को
वर दिया था के तेरी मोक्ष द्वापरान्त मे बलदेवजी
करेंगे ॥ सुदर्शन विद्याधर नाम करके जो स
र्प था अम्बिका वन मे जिसने नन्द का प
ग पैर पकड लिया था वोह पूर्व जन्म मे अ
ष्टावक्र को देखकर हास्य करता भया उ
नोने शाप दे दिया था के तूं सर्प होजा परान्त
मे कृष्ण तेरा मोक्ष करेंगे ॥ व्योमासुर पू
र्व जन्म मे काशीपुरी मे भीमरथ राजा
था उसके आश्रम मे पुलस्तीजी ऋषि
आ गये वो हे राजा उनको देखकर क
आसन पर से नहीं उठा तब पुलस्तीजी

पदे दिया के तु दैत्य हो द्वापर रान्त मे कृ
ष्ण तेरी मोत होकरेगे ॥ और एक वक्त बृ
हस्पतीजी के शुपते अत्सर हुवा था गु
रु उसके बृहस्पतीजी के धर्मपत्नी ता
जो तिथा बृहस्पतिजी को उसको एक स
मय मे तिरस्कार कर दिया था उन्हों ने ॥
फेर श्राप दे दिया था के तु अत्सर हो द्वापर
रा मे कृष्ण तेरा मोत होवे करेगा ॥ प्रतमहु ॥
के ज्या पूर्व जन्म मे सैरन्ध्री नाम कर
के नाम थी जो युधिष्ठर महाराज की
राणी द्रौपदी की नाम थी जब द्रौपदी स
हित युधिष्ठर महाराज को वनवास
हो गया था फेर १२ वर्ष वन मे रहे फेर
१३ वे वर्ष मे विराट राजा के जगह
पधार कर रहे ॥ युधिष्ठर जी तो
कंक ब्राह्मण होकर के रहे उप ॥ भीमसे
न कार रसोईया होकर के रहा ॥ अर्जुन
बृहन्नला हीजड़ा होकर के रहा ॥ नकु
ल जो संग्वाला हुवा सहदेव अश्वशा
ला मे रहा ॥ द्रौपदी विराट की स्त्री के पा
स सैरन्ध्री नाम कार के पधार के रहकर
ती को हसेर जो के ज्यो उह ॥ प्रतमहु ॥ श्री:

पंचजन दैत्य था उसके पास शंख था कृष्ण बलराम
के गुरु के सांदीपनी के अवंतीपुरी के वासी
थे उनके पुत्र को लेने के वास्ते समुद्र के
पास गये तहां से पता लग्या के पंचजन दै
त्य समुद्र के अंतर मे वास करता है वहां
देखा तब कृष्ण भगवान समुद्र के अ
न्तर गये वहां वी गुरु पुत्र नहीं देखे तब
वो हुए पंचजन दैत्य मारा उसके पास
ते शंख ल्याये वो ही पांचजन्य नाम कर
के है जो जीता जी मे लिखा है पांचजन्यं
ऋषीकेशो देवदत्तं धनंजय ॥ यह वोही
पांचजन्य है ॥ पञ्चजन्य कप दैत्यदेहोद्भवं पां
चजन्यम् ॥ फेर जब गुरु पुत्र वहां पर बी
नहीं मिला तब यमराज के पास कृष्ण
गये वहां पर बी जब नहीं मिला तब पा
ताल मे बलिराजे के पास गये वहां प
र मिल गया उसी को ताले कर के अवं
ती पुरी मे आ कर के गुरु जी सांदीप
नी जी को ताई दे देते हुए ॥ फलम् ॥ श्री
गुरु जकु धोबी जो था सो पूर्व जन्म मे त्रेता यु
ग के विषे रजक धोबी था अई रात्रि
के समय मे वो धोबी अपनी स्त्री को
कहावा था [illegible] के

२० [illegible] रहा था

अपने घर मे नहीं रहरा
कालु कहे गई धोबी कहीं रही
मै रामचन्द्र जी की तरह काम न
ही करु गा जेसे रामचन्द्रजी को रा
वण के घर मे सीताजी रही हुई
फेर अपरो घर मे रख लई मै असै
सा काम नही करु गा यह वाक्य
रजक के सरण कर के पहरे दारों
को रामचन्द्रजी के पास कह दिया
था उस वरव त रामचन्द्रजी कों रजा
क को तो कुछ नही कहा था सीताजी
को वन वास दे दिया था ८ मास का
गर्भ भी उस वरवत था सीता जी को फे
र वन मे वाल्मीकी मुनि मिल गये वहां
आश्रम मे रहती रही फेर लव कुश ना
म के दो पुत्र हुए फेर सीताजी पुत्रों को
सौंप के अपरण कर के आप रामजी
के ध्यान धर के पृथ्वी मे समाजाती हुई
... प्रवेश होती हुई सो वो ही रजक धो
बी ... कालु ... ...